NA–912

Seat No. _____

Third Year B. A. Examination

April / May – 2003

Hindi : Paper – VI

(मध्यकालीन काव्य)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **70**

१ भाव, भाषा, छन्द, अलंकार की दृष्टि से अयोध्याकाण्ड श्रेष्ठ काण्ड है । – इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए । १४

अथवा

१ 'अयोध्याकाण्ड' के आधार पर राम के चरित्र की महिमा प्रतिपादित कीजिए । १४

२ 'रहीम–ग्रन्थावली' के आधार पर एक उत्तम नीतिकाव्यकार के रूप में रहीम का मूल्यांकन कीजिए । १३

अथवा

२ रहीम–काव्य के भाव पक्ष पर विचार करते हुए यह प्रतिपादित कीजिए कि रहीम को विविध विषयों का समुचित ज्ञान था । १३

३ '' 'सुदामा–चरित' में कथा के बजाय कुछ कथात्मक स्थितियाँ और प्रसंग ही हैं ।'' – इस कथन के आधार पर 'सुदामा चरित' की कथावस्तु की सोदाहरण समीक्षा कीजिए । १३

अथवा

३ '' 'सुदामा–चरित' में मनुष्य का चरित्र वर्णित है, प्रभु का नहीं ।'' – समझाइए । १३

४ निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : १२

(अ) 'अयोध्याकाण्ड' में रस–निरूपण ।

(ब) 'अयोध्याकाण्ड' में मंथरा–कैकेयी संवाद ।

(क) रहीम की भाषा ।

(ड) सुदामा–कृष्ण मिलन–प्रसंग ।

५ सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : १८

(अ) प्राननाथ तुम्ह बिनु जगमाहीं । मो कहँ सुखद कतुहुँ कछु नाहीं ॥
जिस बिनु देह नदी बिनु वारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे । सरद विमल विधु वदन निहारे ॥

अथवा

(अ) पदकमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहि राम शउरि आन दसरथ सपथ सब साँची कहौं ॥
वरु तीर मारहु लबनु पै जब लगि न पाय परवारिहौं ।
तब लगि न तुलसीदास–नाथ कृपाल पार उतरिहौं ॥

(ब) छिमा बड़न को चाहिए, छोटेन को उतपात ।
का रहिमन हरि को घट्यो, जो भृगु मारी लात ॥
छोटेन सो सोहैं बड़े, कहि रहीम यह रेख ।
सहसन को हय बाँधियत, ले दमरी की मेख ॥

अथवा

(ब) दृग छक्ति छबीली छैलरा की छरी थी ।
मणि जटित रसीली माधुरी मूँदरी थी ॥
अमल कमल ऐसा खूब से खूब देखा ।
कहि सकत न जैसा श्याम का हस्त देखा ॥

(क) सिच्छक हौं सिगरे जग को तिय वाको कहा अब देति हो सिच्छा
जे तप कै परलोक सुधारत, सम्पति की तिनके नहिं इच्छा ॥
मेरे हिये हरि के पद पंकज, बार हजार लै देखु परीच्छा
औरन को धन चाहिये वाबरि, बांमन के धन केवल भिच्छा ॥

अथवा

(क) कछु भाभी हमकौ दियौ, सो तुम काहे न देत ।
चाँपि पोटरी कांखि में, रहे कहाँ केहि हेत ॥